अध्याय–पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

5.2 समस्या कथन

5.3 अध्ययन के उद्देश्य

5.4 परिकल्पनाऐं

5.5 चर

5.6 न्यादर्श का विवरण

5.7 सांख्यिकी विधि

5.8 उपकरण

5.9 अनुसंधान पद्धति

5.10 निष्कर्ष एवं स्पष्टीकरण

5.11 सुझाव

5.12 भविष्य के लिए सुझाव

अध्याय–5

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका :–

सांराश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इस अध्याय मे लघु शोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिये गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक लिंग–भेद समानता को बढावा देने के लिए शिक्षा में किस प्रकार के सुधार कार्य करने चाहिए इसका भी विश्लेषण किया गया है।

5.2 समस्या कथन

कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण के अंतर को जानना।
2. कक्षा 9वी के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

3. कक्षा 9वीं के शहरी छात्राऐं एवं छात्रों के लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

4. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्राऐं एवं छात्रों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

5. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्राऐं एवं शहरी छात्राऐं का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

6. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

5.4 परिकल्पनाऐं –

1. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कक्षा 9वीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. कक्षा 9वीं के शहरी छात्राऐं एवं छात्रों के लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्राऐं एवं छात्रों के लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्राऐं एवं शहरी छात्राऐं के लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों के लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 चर :-

अ) आश्रित चर -

लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण

ब) स्वतंत्र चर-

1. लिंग - छात्राऐं और छात्र

2. क्षेत्र- ग्रामीण और शहरी

5.6 न्यादर्श विवरण-

तालिका क्रमांक-5.1

क्र.	स्कूल का नाम	क्षेत्र	प्रतिदर्श का प्रकार	छात्र	छात्राऐं	कुल विद्यार्थी
1.	श्री भानोबा विद्यालय कुसेगांव, ता-दौण्ड जिला-पुणे	ग्रामीण	उद्देश्यपूर्ण	30	30	60
2.	शेठ ज्योतिप्रसाद विद्यालय, दौण्ड जिला-पुणे	शहरी	उद्देश्यपूर्ण	30	30	60
				60	60	120

5.7. सांख्यिकी विधि :-

1. सांख्यिकी विधि में दो समूहों कि तुलना के लिए 't' परीक्षण का प्रयोग किया।

2. इसमें मध्यमान, मानक विचलन (S.D.),प्रमाणिक त्रुटी , का प्रयोग किया।

3. मुक्तांश (Degree of freedom) तालिका का प्रयोग किया।

5.8. उपकरण :-

प्रदत्तों का संकलन के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली में कुल 30 सवाल थे। इसमें सहमत, तटस्थ और असमत यह पर्याय है। प्रश्नावली में सकारात्मक और नकारात्मक सवाल है। प्रदत्तों का संकलन 3 point Rating Scale पर किया गया है।

5.9 अनुसंधान पद्धति :-

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

5.10 समस्या के निष्कर्ष और स्पष्टीकरण :-

1. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है, कारण यह हो सकता है कि विद्यार्थियों ने आज भी स्त्री के प्रति जो पारंपरिक दृष्टिकोण है, वह विद्यार्थियों में निहीत हो सकता है।
2. कक्षा 9वीं के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है, कारण यह हो सकता है कि आसपास

के सामाजिक परिस्थिती इसके लिए कारणीभूत हो सकती है जो पारम्परिक दृष्टिकोण को परावर्तित करती है।

3. कक्षा 9वीं के ग्रामीण छात्राऐं और छात्रों में लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है, इसका कारण यह हो सकता है कि पुणे से दौण्ड तक रेल्वे व्यवस्था काफी प्रगत है, और दौण्ड रेल्वे स्टेशन के आसपास ही शहर का विकास हुआ है, और यहाँ पर ज्यादा लोग स्थानांतर होकर आये है, जिनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक जागृती ग्रामीण लोगों से निम्न स्तर की है। ग्रामीण भागों में खेती कि वजह से ज्यादा समृद्धता है।
4. कक्षा 9वीं के शहरी छात्राऐं और छात्रों में लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है, कारण यह हो सकता है कि शहरी छात्रों कि तुलना में छात्राऐं अधिक जागृत है, छात्रों को वह जागृति का माहौल न मिला हो। अथवा छात्र पारम्परिक दृष्टिकोण को मानने वाले है।
5. कक्षा नौ के ग्रामीण छात्राऐं एवं शहरी छात्राऐं में लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है, कारण यह हो सकता है कि आज शिक्षा अथवा सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है, और छात्राऐं इसके प्रति जागृत है।
6. कक्षा नौ के ग्रामीण छात्रों और शहरी छात्रों में लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है, कारण यह हो सकता है कि छात्रों में आज भी कुछ हद तक सामाजिक लिंगभेद के प्रति जागृति नहीं है, या फिर उन्हें वैसा माहौल मिला है। लेकिन ग्रामीण छात्रों का दृष्टिकोण शहरी छात्रों से ज्यादा सकारात्मक पाया गया है, यह एक सोचनीय बात है।

Regional Institute of Education, Bhopal Library

5.11 सुझाव :-

बच्चों में बाल्यावस्था से ही एक सोच कि प्रक्रिया शुरू होती है, और वह किशोर अवस्था में जाकर स्थिर होती है, इस समय अगर बच्चो को लिंग पक्षपातपूर्ण व्यवहार होता है, तो उसका लंबे समय तक नकारात्मक दृष्टिकोण रहता है।

आज सभी क्षेत्रों में महिलाओं को पुरूष के समान लाने के प्रयास हो रहे है, और महिला भी इसे अच्छा प्रतिसाद दे रही है। लेकिन आज की हमारी संस्कृति, परम्परा, रिती-रिवाज में और सामाजिक व्यवहार के कारण बच्चों में लिंग पक्षपातपूर्ण व्यवहार दिखाई पड़ता है।

आज बडे नगरों में बाहरी राज्य अथवा जिलों से लोगों का रोजगार के लिए स्थानांतर बढ गया है, जिनकी आमदनी औसत या उसे कम है वह परिवार अपने बच्चों के लिए सुस्त सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक माहौल नहीं दे पाते, उनमें यह पक्षपातपूर्ण व्यवहार ज्यादा पाया गया है। इसलिए सरकार और सेवाभावी संस्थानों में इनके बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना जरूरी है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता को जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है, उनका आधार लेकर कुछ सुझाव दिये है, ताकी स्त्री-पुरूष समानता के प्रति बच्चों का दृष्टिकोण सकारात्मक हो जाये।

परिवार

1. परिवार में लडकियों और लडकों को समान दर्जा मिले ताकी उनकी सोच पक्षपातपूर्ण न हो सके।

2. परिवार में लडकियों की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिये तथा उनके आहार, कपडो, शैक्षिक सुविधा, लडकों के समान मिले। क्योंकि वह भी अपनी क्षमता को बाहर ला सके।

3. माता–पिता एवं परिवार के बडे लोगों ने घर में लिंग पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिये इससे बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव गिर सकता है।

विद्यालय

1. पाठशाला में शिक्षकों का लिंग समानता के प्रति हितेच्छूक व्यवहार होना चाहिये।

2. प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में स्त्री–पुरूष समानता को समुचित करना।

3. विद्यार्थियों को उनके संवैधानिक तथा कानूनी अधिकारों की जागरूकता के लिए विद्यालय में विभिन्न पाठ्य सहभागी क्रियाओं का आयोजन किया जाए।

4. छात्र–छात्राओं को जागरूक करने के लिए विभिन्न विद्यालयों में तथा कक्षाओं में स्त्री समस्या, महिला–पुरूष अनुपात से संबंधित निबन्ध लेखन, व्याख्यान, कार्यक्रम, चित्र बनाना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, महिला विषयों पर लघु नाटिका, तथा महिला दिवस 8 मार्च कार्यक्रम के आयोजन की व्यवस्था कि जाए।

5. विद्यार्थियों में मूल्यों तथा कौशल्य के विकास के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यसहभागी क्रियाओं का आयोजन कराया जाए।

6. विद्यालयों में बालिकाओं को उनके अधिकार एवं व्यक्तित्व गरिमा से परीचित किया जाए।

7. विद्यालयीन समस्त क्रियाकलापों में बालिकाओं, के सहभागिता को सुनिश्चित किया जाए।

8. समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता हासिल करने वाली महिलाओं जैसे ॲनी बेंझट, सरोजिनी नायडू, इंदिर गांधी, कल्पना चावला, अरूंधती रॉय आदि के जीवन वृत्तांत एवं व्यक्तित्व को पाठ्य एवं पाठ्य सहभागी विषयवस्तु से जोड़ा जाये।

समाज–

1. शहरों में स्थानांतर के प्रमाण में वृद्धी हो रही है वैसे स्लम (Slum) क्षेत्र भी बढ रहा है, तो सरकार कि जिम्मेदारी है कि उनके बच्चों कि शिक्षा के लिए अच्छी सुविधा का प्रबंध करें।

5.12 भविष्य के लिए सुझाव–

शोधकर्ता को अध्ययन के अंतर्गत कई प्रश्न सामने आये है जिस पर भविष्य में शोध किया जा सकता है।

1. लिंग समानता के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।

2. अभिभावकों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।

3. अभिभावकों का स्त्री–शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।

4. भारतीय संस्कृति परम्परा, रीति–रिवाज, लिंग समानता को प्रभावित करती है–एक तुलनात्मक अध्ययन।

5. अभिभावकों का लिंग समानता के प्रति दृष्टिकोण एवं आचरण का अध्ययन– तुलनात्मक अध्ययन।

6. समाज में बढ़ती हुई स्त्री असुक्षितता और इसका स्त्री शिक्षा पर प्रभाव।

7. भिन्न सामाजिक और आर्थिक स्तर का लिंग आचरण पर पडने वाला प्रभाव का अध्ययन।

8. शहर के गरीब क्षेत्र और संपन्न क्षेत्र के परिवार में लिंग आचरण के व्यवहार का अध्ययन।